पाठ 1

नई उषा

7XDNY7

– श्री सत्यनारायण लाल

प्रस्तुत कविता आज़ादी के पश्चात् देश के युवाओं को संबोधित है। दासता की कालिमा छँट चुकी है। दासता की बेड़ियों को काटने के लिए भारतीय नवयुवाओं ने असंख्य कुर्बानियाँ दी हैं। अतः आज़ादी के इन स्वर्णिम लम्हों में आज उत्तरदायित्व कुछ और अधिक है। देश की प्रगति और विकास के लिए युवा वर्ग को पहल और परिश्रम के लिए प्रतिबद्ध होना होगा। विभिन्न प्रकार की संकीर्णताओं से ऊपर उठकर अशिक्षा, अज्ञान और अन्याय के प्रति लोगों को सतर्क करते हुए एक संवेदनशील मानवीय समाज को मूर्त रूप देने के प्रयत्नों को अनवरत गति देनी पड़ेगी।

उठो, नई किरण लिए जगा रही नई उषा
उठो, उठो नए संदेश दे रही दिशा–दिशा।

खिले कमल अरुण, तरुण प्रभात मुस्करा रहा,
गगन विकास का नवीन, साज है सजा रहा।
उठो, चलो, बढ़ो, समीर शंख है बजा रहा,
भविष्य सामने खड़ा प्रशस्त पथ बना रहा।

उठो, कि सींच स्वेद से, करो धरा को उर्वरा,
कि शस्य श्यामला सदा बनी रहे वसुंधरा।
अभय चरण बढ़ें समान फूल और शूल पर,
कि हो समान स्नेह, स्वर्ण, राशि और धूल पर।

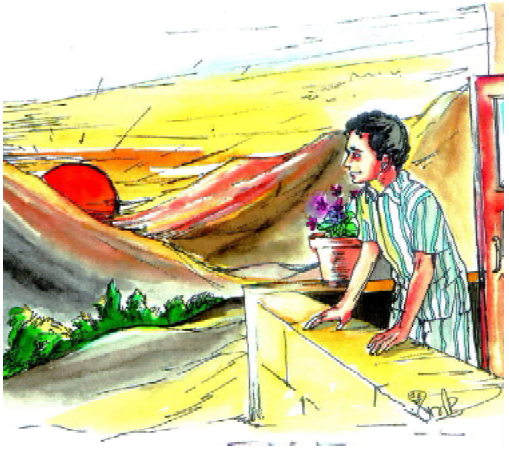

सुकर्म, ज्ञान, ज्योति से स्वदेश जगमगा उठे,
कि स्वाश्रयी समाज हो कि प्राण–प्राण गा उठे।
सुरभि मनुष्य मात्र में भरे विवेक ज्ञान की,
सहानुभूति, सख्य, सत्य, प्रेम, आत्मदान की।

प्रवाह स्नेह का प्रत्येक प्राण में पला करे,
प्रदीप ज्ञान का प्रत्येक गेह में जला करे।
उठो, कि बीत है चली प्रमाद की महानिशा,
उठो, नई किरण लिए जगा रही नई उषा।

शब्दार्थ :– **स्वेद** – पसीना, **शस्य** – धान, अन्न, **उर्वरा** – उपजाऊ, **विस्तृत** – व्यापक, **सुकर्म** – अच्छा कार्य, **स्वाश्रयी** – स्वयं पर आश्रित, **सुरभि** – सुगंध, **सख्य**– सखा या मित्र भाव, **आत्मदान** – बलिदान, **गेह** – घर, **प्रमाद** – आलस्य, **महानिशा** – गहन रात्रि, रात्रि का मध्य भाग।

अभ्यास

पाठ से

1. नई उषा से कवि का क्या अभिप्राय है?
2. सभी मनुष्यों में किन–किन गुणों का विकास होना चाहिए?
3. कविता में कवि के 'प्राण–प्राण गा उठे' कहने का क्या आशय है ?
4. समाज को स्वाश्रयी कैसे बनाया जा सकता है?
5. नई उषा शीर्षक कविता में कवि किन–किन परिवर्तनों की ओर संकेत करता है?
6. कविता में वर्णित वसुंधरा शस्य श्यामला सदा कैसे बनी रह सकती है ? स्पष्ट कीजिए।
7. प्रमाद की महानिशा बीतने से कवि का क्या तात्पर्य है ?
8. प्रस्तुत कविता नवयुवकों के मन में किन–किन भावों का संचार कर रही है ?
9. यह कविता नवयुवकों को क्या संदेश दे रही है?

पाठ से आगे

1. कविता की इन पंक्तियों के भाव को अपने शब्दों में लिखिए–

   उठो, चलो, बढ़ो, समीर शंख है बजा रहा,
   भविष्य सामने खड़ा प्रशस्त पथ बना रहा।
   प्रवाह स्नेह का प्रत्येक प्राण में पला करे,
   प्रदीप ज्ञान का प्रत्येक गेह में जला करे।

   7XMJZU

2. उषाकाल में हमारे आस–पास के परिवेश में क्या परिवर्तन नजर आता है और हमें कैसा महसूस होता है? लिखिए।

3. स्वाश्रयी अथवा स्वनिर्भर समाज से आप क्या समझते हैं? शिक्षक से चर्चा कर इसकी विशिष्टताओं को लिखिए।

4. कवि धरा को उर्वर करने के लिए स्वेद से सींचने का आमंत्रण देता है, इसके विभिन्न तरीकों पर आपस में चर्चा कर कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।

भाषा से

1. कविता में अरुण, प्रभात, स्वेद्, धरा, सुकर्म, शस्य जैसे शब्द आए हैं, जिन्हें हम 'तत्सम' शब्द कहते हैं। तत्सम (तत् + सम = उसके समान) आधुनिक भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त ऐसे शब्द हैं जिनको संस्कृत से बिना कोई रूप बदले ले लिया गया है। अर्थात ये शब्द सीधे संस्कृत से आये हैं। कविता से ऐसे शब्दों का चुनाव कर उनका अर्थ अपनी भाषा में स्पष्ट करते हुए वाक्य में प्रयोग कीजिए।

2. नई किरण, नए संदेश, खिले कमल जैसे शब्द कविता की पंक्तियों में प्रयुक्त हुए हैं, जो संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता बता रहे हैं अथवा उत्पन्न कर रहे हैं, जिन्हें हम विशेषण कहते हैं । कविता में प्रयुक्त ऐसे विशेषणों को पहचान कर उनकी जगह नए विशेषणों के सार्थक प्रयोग कीजिए। जैसे –सुनहली किरण, शुभ संदेश, मुस्कुराते कमल।

3. उठो, उठो नए संदेश दे रही दिशा–दिशा।
इस पंक्ति में 'उ एवं द' वर्ण की आवृत्ति कई बार हुई है।

जहाँ एक ही पंक्ति में एक ही वर्ण की बार–बार आवृत्ति होती हो वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है। इससे भाषा में प्रवाह, लय और सौंदर्य उत्पन्न होता है।

यहाँ कविता की एक पंक्ति दी गई है। दिए गए शब्दों की सहायता से शेष तीन पंक्तियों की रचना कीजिए।

पूर्व दिशा, सूरज, चहचहाना, पक्षी, रात, अँधेरा, खिला, किरण, बाग–बगीचे।

जागो–जागो हुआ सवेरा।

.....

.....

.....

.....

योग्यता विस्तार

1. सुमित्रानंदन पन्त रचित 'प्रथम रश्मि' शीर्षक कविता की कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं, पूरी कविता ढूँढ़कर पढ़िए और साथियों तथा शिक्षकों के साथ चर्चा कीजिए।

प्रथम रश्मि का आना रंगिणि!
तूने कैसे पहचाना?
कहाँ–कहाँ हे बाल–विहंगिनि!
पाया तूने वह गाना?
सोयी थी तू स्वप्न नीड़ में,
पंखों के सुख में छिपकर,
ऊंघ रहे थे घूम द्वार पर,
प्रहरी–से जुगनू नाना।
शशि–किरणों से उतर–उतरकर,
भू पर कामरूप नभ–चर,
चूम नवल कलियों का मृदु–मुख,
सिखा रहे थे मुसकाना।

2. जल्दी जागकर सूर्योदय से पूर्व के दृश्य का अवलोकन कीजिए। उस समय प्रकृति में क्या–क्या घटित होता है, उस पर दस वाक्य लिखिए।